Bihar Board Class 12th Hindi Book Notes Chapter 3 तुलसीदास के पद

तुलसीदास पद कवि परिचय (1543–1623)

जीवन–परिचय–
तुलसीदास को हिन्दी साहित्य का जाज्वल्यमान सूर्य माना जाता है, इनका काव्य हिन्दी साहित्य का गौरव है। गोस्वामी तुलसीदास रामभक्ति शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। वैसे तो वे समूचे भक्ति काव्य के ही प्रमुख आधार–स्तम्भ हैं। उन्होंने समस्त वेदों, शास्त्रों, साधनात्मक मत–वादों और देवी–देवताओं का समन्वय कर जो महान कार्य किया, वह बेजोड़ है।

विभिन्न विद्वानों के मतानुसार तुलसीदास का जन्म सन् 1543 ई. में बाँदा जिले (उ.प्र.) के राजापुर नामक गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। ये मूल नक्षत्र में पैदा हुए थे। इस नक्षत्र में बालक का जन्म अशुभ माना जाता है इसलिए उनके माता–पिता ने उन्हें जन्म से ही त्याग दिया था। इस कारण बालक तुलसीदास को भिक्षाटन का कष्ट उठाना पड़ा और कष्टों भरा बचपन व्यतीत करना पड़ा।

कुछ समय उपरान्त बाबा नरहरिदास ने बालक तुलसीदास का पालन–पोषण किया और उन्हें शिक्षा–दीक्षा प्रदान की। तुलसीदास का विवाह दीनबन्धु दास की पुत्री रत्नावली से हुआ। पत्नी के प्रति अत्यधिक आसक्ति होने के कारण एक बार वे पत्नी के मायके जाने पर उसके पीछे–पीछे अपने ससुराल जा पहुँचे थे। तब पत्नी ने उन्हें फटकारते हुए कहा था–

लाज न आवत आपको, दौरे आयह साथ।
धिक–धिक ऐसे प्रेम को, कहा कहौं मैं नाथ॥
अस्थि चर्ममय देह मम, तामैं ऐसी प्रीति।
ऐसी जौ श्रीराम में, होति न भवभीति।

पत्नी की इस फटकार ने पत्नी आसक्त विषयी तुलसी को महान रामभक्त एवं महाकवि बना दिया। उनका समस्त जीवन प्रवाह ही बदल गया। तुलसी ने साधना प्रारंभ कर दी। रामानन्द से रामभक्ति की दीक्षा ली और उन्हें अपना गुरु माना। उन्होंने काशी व चित्रकूट में रहकर अनेक काव्यों की रचना की। सन् 1623 ई. में (सम्वत् 1680) श्रावण शुक्ल सप्तमी के दिन तुलसीदास ने असीघाट पर प्राण त्यागे थे। उनकी मृत्यु के बारे में कहा जाता है–

संवत् सोलह सौ असी, असी गंग के तीर।
श्रावण शुक्ल सप्तमी, तुलसी तजै शरीर॥

रचनाएँ–'रामचरितमानस' तुलसीदास द्वारा रचित विश्व प्रसिद्ध रचना है। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या 40 तक बताई जाती है। पर अब तक केवल 12 रचनाएँ ही प्रमाणिक सिद्ध हो सकी हैं।

तुलसीदास के पद कविता का सारांश

प्रस्तुत दोनों पदों में महाकवि तुलसीदास की अपने आराध्य भगवान श्रीराम के प्रति अटूट एवं अडिग आस्था प्रकट हुई है। इन पदों में कवि की काव्य और कला संबंधित विशिष्ट प्रतिभा की अद्‌भुत झलक मिलती है।

प्रथम पद कवि द्वारा रचित विनय पत्रिका के 'सीता स्तुति खंड' से उद्धृत है। कवि ने राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न आदि की विधिपूर्वक स्तुति करने के बाद सीताजी की स्तुति की है। उसने सीता को माँ कहकर संबोधित करते हुए अपनी भक्ति और श्रीराम के मध्य, माध्यम बनने का विनम्र अनुरोध किया है, जिससे उसके आराध्य श्रीराम उसकी भक्ति से प्रभावित होकर उसका इस भव सागर से उद्धार कर दें। उसने उचित समय पर ही अपने अनुरोध को श्रीराम के समक्ष प्रस्तुत करने की प्रार्थना की है जिससे वे दयार्द्र हो उसकी भी बिगड़ी बना दें।

द्वितीय पद में कवि ने श्रीराम के प्रति अटूट विश्वास एवं अडिग आस्था प्रकट करते हुए. उनसे अपनी दीन–हीन अवस्था का वर्णन किया है। वह अपने आराध्य देव से अत्यन्त विनम्रता पूर्वक उनकी अनुकम्पा का एक टुकड़ा पाने की आकांक्षा से भीख माँग रहा है। वह अपने प्रभु की भक्ति–सुधा से अपना पेट भर लेना चाहता है।

पदों का भावार्थ।

प्रथम पद :
कबहुँक अंब अवसर पाइ।
मरिओ सुधि द्याइबी कछु करुन–कथा चलाइ।।
दीन सब अंगहीन, छीन, मलीन, अघी अघाइ।
नाम लै भरै उदर एक प्रभु–दासी–दास कहाई॥
बूझिहैं 'सो है कौन', कहिबी नाम दसा जनाई।
सुनत रामकृपालु के मेरी बिगारिऔ बनी जाइ।।
जानकी जगजनीन जन की किए बचन–सहाइ।
तरै तुलसीदास भव तव–नाथ–गुन–गन गाइ।।

भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियाँ "विनय पत्रिका' काव्य कृति से ली गयी है। विनय पत्रिका की रचना करने के पीछे कवि का उद्देश्य है कि कविता रूपी पत्र के माध्यम से अपनी दीनता पीड़ा–व्यथा को प्रभु श्रीराम के चरणों में पहुँचाना। इसमें सभी देवों की स्तुतियाँ की गयी हैं. और उन्हीं के माध्यम से प्रभु के प्रति भक्ति–भावना भी प्रदर्शित की गयी है। विनय के साथ भक्ति, निष्ठा, विश्वास के द्वारा अपनी निजी व्यथा को प्रभु श्रीराम के चरणों में पहुँचाने के पीछे कवि की निजी पीड़ा ही नहीं है, बल्कि इसमें उस काल की अनेक राष्ट्रीय समस्याओं का परोक्ष रूप से वर्णन है। उन विषम परिस्थितियों से मुक्ति दिलाने वाले एकमात्र कोई है तो वह श्रीराम ही हैं। अतः, संत तुलसीदासजी ने वृहत् मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति और संकट समाधान के लिए विनय पत्रिका की रचना की जिसमें कवि की निजता भी समावेशित है।

उपर्युक्त पंक्तियों में माँ सीता की वंदना करते हुए कवि विनती करता है कि हे माँ कभी अवसर पाकर मेरी विनती प्रभु श्रीराम के चरणों में प्रस्तुत करना। मेरी करुण कथा की चर्चा करते. : हुए मेरे प्रति प्रभु–कृपा के लिए याद दिलाना। उन्हें याद दिलाना कि आपकी दास का एक भक्त।

आपका नाम–जप एवं भजन के द्वारा अपनी जीविका चला रहा है। मेरी दीन–हीन अवस्था की सुधि श्रीराम को छोड़कर कौन लेगा? श्रीराम की अगर कृपा हो जाएगी तो मेरी दीन–दशा सुधर जाएगी। है जगत की जननी, मेरी तुमसे विनती है कि अपनी कृपा कर मुझ असहाय की सहायता करें। तुलसीदास भवसागर पार करानेवाले प्रभु श्रीराम का गुणगान करते हुए दीनता से मुक्ति के लिए प्रार्थना करते हैं।

दूसरा पद :
द्वार हौं भोर ही को आजु।
रटत रिरिहा आरि और न, कौर हो तें काजु।।

https://www.evidyarthi.in/

कलि कराल दुकाल, दारुन, सब कुभाँति कुसाजु।
नीच जन, मन, ऊँच, जैसी कोढ़ में की खाजु।।
हहरि हिय में सदय बूझयो जाइ साधु–समाजु।।
मोहुसे कहुँ कतहुँ कोउ, तिन्ह कहयो कोसलराजु।
दीनता–दारिद दलै को कृपाबारिधि बाजु।
दानि दसरथरायके, तू बानइत सिरताजु।।
जनमको भूखो भिखारी हौं गरीबनिवाजु।
पेट भरि तुलसिहि जेंवाइय भगति–सुधा सुनाजु।।

भावार्थ : प्रस्तुत पंक्तियों में तुलसीदासजी ने अपनी दीनता का वर्णन करते हुए उस समय के भीषण दुर्भिक्ष काल का भी यथार्थ चित्रण किया है। तुलसीदासजी को उनके सगे–सम्बन्धियों ने ऐसा छोड़ा दिया है कि फिर कभी उनकी ओर भूलकर भी देखा नहीं। उनके हृदय में इसका जो संताप था इसको दूर करने के लिए उनको संतों की शरण में जाना पड़ा और उनका आश्वासन भी मिला तब उनको विश्वास हो गया कि राम की शरण में जाने से सब संकट दूर हो जाता है। तुलसीदास ने इसका भी उल्लेख किया है।।

तुलसीदास अपने–आप सन्त समाज में गए और गए भी तो अपनी समझ से। उस समय उनकी अवस्था ऐसी थी कि वह अपने भविष्य की चिन्ता कर सकते थे और अपनी परिस्थिति को स्पष्ट कर सकते थे। साथ ही इतना और भी कहा जा सकता है कि तुलसीदास को यह दिन किसी कराल, दारुण, दुकाल के कारण देखना पड़ा था क्योंकि इसका भी निर्देश प्रथम पद में है ही। तो क्या यह कहना यथार्थ न होगा कि तुलसी की दीनता और तुलसी की दरिद्रता का मुख्य कारण दारुण अकाल ही था।

अकालों की कोई ऐसी सूची हमारे सामने प्रस्तुत नहीं है जिससे कि हम उस समय की वस्तुस्थिति को ठीक–ठीक समझ सकें। तो भी इतना तो कहा ही जा सकता है कि जो कराल दारुण, दुकाल संवत 1613 में पड़ा था और जिसमें मनुष्य मनुष्य को खाने तक लगा था, वहीं तुलसीदास की इस यातना का भी कारण रहा होगा, और इसी क्रूरता से दहलकर ही वे संत शरण में गए होंगे। इस संकट का इन पंक्तियों में संत कवि तुलसीदासजी ने माँ सीता को भगवान श्रीरामचन्द्र के सामने बड़ी चतुराई से उपस्थित करने को कहा है।

वे कहते हैं कि हे माँ आप कहिएगा कि आपकी दासी का दास (तुलसी का नाम वाला) व्यक्ति आपका ही नाम लेकर जी रहा है। यह अस्पष्ट बात सुनकर श्रीरामजी को स्वभावतया नाम जानने की उत्सुकता होगी। वंदना प्रकरण के अनन्तर भक्तिवर तुलसीदासजी ने अपने स्वामी से दैन्य–निवेदन आरंभ किया है। अपने प्रभु के महत्त्व, औदार्य, शील और जीव के असामर्थ्य को दिखाते हुए उसके उद्धार की याचना की है। उन्होंने बीच–बीच में अपने नैतिक उत्थान की अभिलाषा भी व्यक्त की है।